Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23037
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23037

CONFERENCE PAPER

संगीत और मीडिया

दलेर कौर

1. कन्या महाविद्यालय, जालंधर.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
संगीत, मीडिया, रेडियो, संगीत प्रसार, फिल्मी संगीत, सांस्कृतिक।

Abstract

संगीत मानव जीवन को मिली एक साधना है। यह गायन वादन और नृत्य का एक कलात्मक मिश्रण है। जिसे भारतीय संस्कृति में आत्मा की अभिव्यक्ति माना गया है। संगीत भावनाओं, संस्कृति और परंपराओ को अभिव्यक्ति करने का मुख्य माध्यम है। संगीत और मीडिया का संबंध आधुनिक समाज में अत्यंत प्रभावशाली है। प्राचीन समय से लेकर आधुनिक रूप में मीडिया संगीत के संचार और प्रसार में अत्यंत विशेष भूमिका निभा रहा है, जिस से संगीत की प्रस्तुति प्रसार और ग्रहण करने के तरीकों में व्यापक परिवर्तन आया है । आधुनिक युग में रेडियो, टैलीविज़न, फिल्म, इंटरनेट और सोशल मीडिया जैसे विभिन्न मीडिया माध्यमों ने संगीत की लोकप्रियता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मीडिया में रेडियो के आने से श्रोताओं को विशेष लाभ पहुँचा और प्रसिद्ध कलाकारों को रेडियो पर सुनने का अवसर मिला । युट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक और म्यूज़िक स्टीमिंग प्लेटफार्म के माध्यम से कलाकार अपन रचनाओं को जन जन तक पहुँचाने का अवसर मिला। नए कलाकार को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिला । फिल्म उद्योग ने भी संगीत के विकास में विशेष भूमिका निभाई है। संगीत हमेशा ही भारतीय सिनेमा में महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त किया है। मीडिय ने संगीत को सीमित मंच से उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचाया है। बहुत सारे लोक गीत, शास्त्रीय संगीत में प्रमुख रागों का रिकॉर्ड करके सुरक्षित रखा गया है । जिसका श्रोताओं को अपनी पसंद का गीत,

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- दलेर कौर
Address:- कन्या महाविद्यालय, जालंधर.

संगीत सुनने को मिल रहा है। अंत में हम कह सकते हैं कि मीडिया संगीत के क्षेत्र में अत्यन्त विशेष भूमिका निभा रहा है। मीडिया ने संगीत को न केवल मनोरंजन का साधन बल्कि एक सुलभ इंटरैक्टिव और वैश्विक उद्योग बना दिया है। कला के संरक्षण में सदियों से मीडिया का विशेष नाम हो गया है। तकनीकी विकास के साथ मीडिया की शक्ति और भी बढ़ गई है। रियालिटी शो में भारतीय संगीत की प्रसिद्धि दिलाई है। मीडिया ने संगीत, शिक्षा, शौध और सांस्कृतिक संरक्षण ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न आनलाईन कार्यक्रम, वीडियो ट्यूटोरियल और डिजिटल संग्रालय संगीत की परंपराओं को सुरक्षित करने में योगदान दे रहा है। मीडिया ने संगीत को वैश्विक स्तर तक पहचान दिलाने में नई कालाकारों को मंच पर लाने और संगीत की लोक परंपराओं को सुरक्षित रखने में विशेष भूमिका निभाई है।

Introduction:-

संगीत स्वर, ताल और लय का कलात्मक संयोजन है, जो भावनाओं को व्यक्त करता है और कानों को सुखद लगता है। भारतीय संगीत परंपरा में, गायन वादन और नृत्य के त्रिविध संगम को संगीत कहा जाता है। जहाँ नृत्य वादन के अधीन और वादन गायन के अधीन होता है। यह भावनाओं की भाषा है जो खुशी, दुःख, प्रेम या शाँति को शब्दों के बिना ही व्यक्त कर सकती है। संगीत में मीडिया का इतिहास प्राचीन मौखिक परंपरा से लेकर आधुनिक डिजिटल स्ट्रीमिंग तक का एक बहुत लंबा सफर है। 20वीं सदी में रेडियो, ग्रामोफोन और फिल्मों ने संगीत को जन जन तक पहुँचाया, भारत में 1931 में पहली हिन्दी फिल्म के साथ बॉलीवुड संगीत का युग शुरू हुआ, जो आज दुनिया में प्रसिद्धी प्राप्त कर रहा है।

संगीत मुख्य रूप से गुरु शिष्य परंपरा, भजनों और लोक गीता के माध्यम से फैलना शुरू हुआ। 19वीं सदी के अंत में ग्रामोफोन रिकार्ड को घर-घर तक पहुँचाया। भारत में 1930 के दशक में रील-टू-रील टेप रिकार्डर ने फिल्म संगीत को रिकॉर्ड करने में क्रांति ला दी। 1970—80 के दशक में कैसेट ने भारत में संगीत उद्योग को बदल दिया। जिससे गाने हर जगह बजने लगे। 1982 में काम्पैक्ट डिस्क के आगमन से ध्वनि की गुणवत्ता में सुधार हुआ। 2000 के दशक में एमपीथ्री, ट्युन्स, 2010 के बाद स्पोटिफाई, यूट्युब, जिओ सावन ने संगीत को पूरी तरह से डिजिटल बना दिया।

संगीत मानव जीवन का एक अभिन्न और महत्वपूर्ण अंग है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि मन की भावनाओं, मन के विचारों और हर देश की संस्कृति का माध्यम भी है। भारतीय परंपरा में संगीत को एक दिव्य कला माना गया है जिसका आत्मा और परमात्मा से संबंध माना गया है यह मानसिक शक्ति प्रदान करना है, तनाव को कम करता है और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में सहायक होता है आज के युग में तकनीक और मीडिया के माध्यम से संगीत का स्वरूप और भी व्यापक हो गया है। रेडियो, टैलिविज़न और इंटरनेट के जरिए संगीत आसानी से विश्व के हर कोने तक पहुँ गया है। हर नए कलाकार की पहचान भिन्न रही है और संगीत उद्योग में भी विकास हो रहा है।

विवेचनः-

प्रीचन समय की बात की जाए तो स समय में संगीत के प्रचार और प्रसार में विभिन्न माध्यम उपयोग के लिए प्रोयग किए जाते थे। प्राचीन समय में मौखिक परंपरा की विशेष भूमिका मानी जाती थी। एक पीढ़ी से चलकर दूसरी पीढ़ी तक गुरु से संगीत की शिक्षा शिष्य को दी जाती थी। गुरु अपने शिष्य को ताल, लय, स्वर और बंदिशे के माध्यम से याद कराते थे। लिखित साधनों का भी उस समय प्रयोग किया जाता था। संगीत का प्रयोग धार्मिक कार्यक्रम, पूजा-पाठ, उत्सव और लोक परंपराओं में किया जाता था। भजन, कीर्तन और मंत्रों के जाप के माध्यम से संगीत का प्रचार और प्रसार किया जाता था।

लोक परंपराओं का भी उस समय विशेष प्रचलन था। गाँवों में महिलाओं द्वारा लोक गीत, लोक नृत्य और कथाएँ संगीत के माध्यम के जन जन तक पहुँचाया जाता था। उस समय बहुत सारे लोक गायक, गायकाए अपनी मधुर आवाज से संगीत का प्रचार और प्रसार करते थे। विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों जैसे वीणा, मृदंग, बांसुरी आदि का प्रयोग संगीत को प्रस्तुत करने के लिए होता था। ढोलकी साज का प्रयोग भी लोक गीतों के साथ अधिक किया जाता था। जो एक समूह में गाए जाते थे।
आधुनिक समय की बात की जाए तो संगीत जन जन तक पहुँचाने में विशेष भूमिका निभा रहा है।

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की बात की जाए तो इसमं रेडियो संगीत के प्रचार में प्रभावशाली भूमिका निभा रहा है। इससे नए कलाकारों को मंच पर गाने का अवसर प्रधान हो रहा है। टैलिविज़न भी संगीत कार्यक्रम, रियालिटी शो और शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत,

फिल्मी संगीत, संगीत प्रतियोगिताओं में कई प्रतिभाओं का पहचान दिला रहा है। डिजिटल मीडिया का भी संगीत में विशेष भूमिका निभा रहा है इसमे आनलाईन प्लेटफॉर्म पर कहीं भी बैठ कर संगीत सुना जा सकता है। स्पोटिफाई, गाना, जिओ सावन आदि यूट्युब पर भी हर तरह की संगीत का सुना जा सकता है। सोशल मीडिया की बात की जाए तो फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर और टिकटॉक, शॉर्ट वीडियो के माध्यम से भी संगीत का प्रचार होता है।

प्रिंट मीडिया की बात की जाए तो इसने संगीत, पत्रकार, संगीत पुस्तके समाचार पत्र, शोध पत्र का भी प्रयोग किया जाता है। बहुत सारी म्यूज़िक ऐप है, जिसके द्वारा संगीत सुना जा सकता है। जैसे पॉडकास्ट और आडियो प्लेटफार्म भी लोकप्रिय हो रहे हैं, जिसमें यंग जनरेशन भी अपनी विशेष भूमिका निभाते नजर आ रही है। आधुनिक समय में संगीत का स्वरूप बहुत विशाल हो चुका है, जिसमें इलैक्ट्रॉनिक डिजिटल और सोशल मीडिया ने संगीत का वैश्विक स्तर तक पहुँचान दी है। संगीत एक मनोरंजन का साधन ही नहीं, बल्कि उक उद्योग बन चुका है। इसमें बहुत सारे वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है। संगीत और मीडिया में प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्रों में सबसे महत्वपूर्ण इलैक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्र है। इसका फिल्मो, टी.वी. और डिजिटल म्यूज़िक में व्यापक प्रयोग हो रहा है। डिजिटल पियानो, ड्रम मशीन, सैम्परल, इलैक्ट्रॉनिक गिटार, इलैक्ट्रॉनिक तबला, लूप आदि का प्रयोग किया जाता है। जो संगीत का प्रसार और प्रचार भी हो रहा है। और बहुत सारे संगीतिक कार्यक्रमों में भी इन वाद्य यंत्रों का प्रयोग हो रहा है।

मीडिया ने संगीत सीखने की प्रक्रिया को भी आसान बना दिया है। कलाकार अब दुनिया के किसी भी कोने से वीडियो कॉल के जरिए लाईन कोलोबोरेशन कर सकते हैं। आनलाईन कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें बहुत सारे नए कलाकार अपनी प्रतिभा और संगीतक बारीकियों को बाँटते हैं। श्रोताओं के सामने पेश भी करते हैं। स्पोटीफाई, ऐपल म्यूज़िक और जिओ सावन, प्लेटफॉर्म व संगीत को श्रोताओं की उंगलियों तक पहुँचा दिया है। जहाँ तक कि कॉलेज और महाविद्यालय में भी संगीत शिक्षा को प्रभावशाली और आकर्षक बनाने में मीडिया (डिजिटल, सोशल और इलैक्ट्रॉनिक एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यूट्युब का उपयोग करके छात्र लोकप्रिय गानों या प्रसिद्ध आकेस्ट्रा को देखकर वाद्ययंत्र सीखने के लिए प्रेरित होता है। मल्टीमीडिया तकनीक में ग्राफिक्स, ध्वनि और वीडियो का उपयोग करके संगीत को समझने में आसानी हो गई है। मीडिया विद्यार्थी में आत्मविश्वास भी बढ़ाता है और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है।

मीडिया के माध्यम से संगीत शिक्षा ने केवल कक्षाओं तक सीमित है बल्कि यह आनलाईन शिक्षण के द्वारा घर-घर तक पहुँच रही है। बहुत सारे संगीत कार्यक्रमों में भी मीडिया अपनी विशेष भूमिका निभा रहा है। लाईव कार्यक्रमों में हैशटैग, पोल और कमेंट्स का उपयोग करके दर्शकों को शामिल किया जाता है। जिससे वे कवेल श्रोता ही नहीं, बल्कि भागीदार बन जाते हैं। यूट्युब चैनल और इंस्टाग्राम, फेसबुक कलाकारों को समर्पित प्रशंसक आधार और सीधे संवाद करने की अनुमति देते हैं। फिल्मी संगीत में भी मीडिया अपनी विशेष भूमिका निभा रहा है। रेडियो और टैलीविज़न ने फिल्मी संगीत को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रेडियो के माध्यम से पूराने समय में गीतों को प्रसारण होता था। जिसमें लोग नई फिल्मों और उनके संगीत से परिचित होते थे। दूरदर्शन और टी.वी चैनलों ने संगीत कार्यक्रम और फिल्मी गीतों के प्रसारण द्वारा संगीत को घर घर तक पहुँचाया। मीडिया ने फिल्मी संगीत के व्यवसायिक पहलू को भी मजबूत बना दिया है। डाउनलोड और ऑनलाईन न्यूज़ के आधार कलाकारों और निर्माताओं को आय प्राप्त होती है। इसके साथ ही, ब्रांड, प्रमोशन और विज्ञापन के जरिए भी फिल्मी गीतों का उपयोग किया जाता है।

आज संगीत मीडिया के जरिए वैश्विक स्तर तक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत, पॉप संगीत और लोक संगीत अब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सुने और सराहे जा रहे हैं। आज हर भारतीय श्रोता किसी भी देश का चाहे वो अमेरिकी रैप या अफ्रीकी बीट्स हो, आसानी से सुन सकता है। अलग-लग देशकी संस्कृतियों के संगीत तत्व मिलकर नए-नए सगीत रूपों का निर्माण कर रहे हैं। मीडिया ने नए और उभरते कलाकार को भी अवसरों के द्र खोल दिए हैं, इंस्टाग्राम, फेसबुक, यूट्युब के जरिए अपने गीत साँझा करके लोकप्रियता हासिल कर सकते हैं। इसमें हर देश की विभिन्न संस्कृतियां एक दूसरे से जुड़ रही है। यह दूसरे देश का संगीत सुन कर संगीत को सीमाओं से मिल कर वैश्विक मंच तैयार किया है। फ्यूजन और आधुनिक के चलते पांरपरिक संगीत के मूल स्वरूप में बदलाव दिखने को मिल रहा है। डीजिटल ऑडियो साऊंड, एडिटिंग, साफ्टवेयर और इलैक्ट्रॉनिक वाद्यों ने संगीत को आकर्षक बना दिया है।

संगीत को गहराई से समझने में भी मीडिया अपनी विशेष भूमिका निभा रहा है। पहले जहाँ संगीत की शिक्षा गुरु शिष्य परंपरा तक सीमित थी, पर अब विभिन्न प्रकार के माध्यम कोई भी व्यक्ति संगीत को अधिक गहराई, विविधता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझ सकता है। रेडियो के माध्यम से शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत और आधुनिक संगीत सुनने का अवसर मिला जिससे लोगों का संगीत

को सीखने की दिलचस्पी पैदा हुई। टैलीविज़न पर बहुत सारे रियालिटी शो आवाज़ पंजाब दी, वॉयस ऑफ पंजाब, इण्डियन आडियल में नये प्रतिभागियों को जाने का अवसर प्रधान हुआ। इससे संगीत की प्रसुतति शैली, भाव-भेगिमां और तकनीकी पहुलओं को समझने में मदद मिलती है और इसे संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर भी प्रधान होता है। यूट्युब, इंस्टाग्राम और फेसबुक ने संगीत सीखने को और ज्यादा सरल बना दिया है। इसमें सभी प्रकार की गायन शैलियों का संगीत आसानी से उपलब्ध हो रहा है। राग, ताल, सुर और वाद्य संत्रों की बारीकियों को बार-बार देखकर और सुनकर समझा जा सकता है।

ऐजुकेशनल मीडिया में ऑनलाईन कोर्स म्यूज़िक ऐप ने संगीत को वैज्ञानिक तरीके से समझने में मदद की है। ऑनलाईन प्रोग्राम में रागों की संरचना, इतिहास और प्रयोग को विस्तार से समझा जाता है। जिससे विद्यार्थी केवल सुनने तक सीमित नहीं रहता बल्कि संगीत के सिद्धाव को भी गहराई से समझते है। बहुत सारे ऑनलाईन, थियोरी + प्रैक्टिकल टॉपिक ऑफ म्यूज़िकल थियोरी, हिस्ट्री, मॉर्डन पीरियड, प्रैक्टिकल भी बहुत सारी तालों का ज़िकर मिलता है। जिससे विद्यार्थी घर बैठे आसानी से संगीत के हर पाठ को ग्रहण कर रहे हैं। मीडिया ने संगीत को सीखने समझने और अनुभव करने के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। यह केवल ज्ञान संगीत है, बल्कि एक ऐसा माध्यम है, जो संगीत को अधिक, सुलभ, रोचक और गहराई से समझने योग्य बनाता है। श्रोताओं को बना बनाया संगीतिक पाठ सीखने को मिल जाता है। संगीत की बारीकियों को समझने वाले बड़ी सरलता से संगीत के शास्त्रीय पहल, लोक पहल को समझ रहे हैं और संगीत का ग्लोबल स्तर तक पहुँचाने में विशेष भूमिका भी उदा कर रहे हैं।

मीडिया ने तकनीकी विकास में भी विशेष योगदान दिया है। डिजिटल रिकार्डिंग, मिक्सिंग और एडिटिंग आसान हो गई है। ए आई और सॉफ्टवेयर के माध्यम से नए प्रकार के संगीत बनाए जा रहे हैं। गायन की रिकार्डिंग पूरी तरह से मीडिया और तकनीक पर निर्भर हो चुकी है। मीडिया ने रिकार्डिंग को आसान और व्यापक बना दिया है। आज डिजिटल रिकार्डिंग का उपयोग हो रहा है कंप्यूटर, माइक्रोफोन और सॉफ्टवेयर की मदद से आवाज़ को स्पष्ट और शुद्ध बनाया जाता है। एक ही गायक अब कई परतों में गा सकता है। रिवर्ब, आटो-ट्यून जैसे टूल्स से आवाज़ को सुरीला बनाया जा सकता है। मीडिया सॉफ्टवेयर के जरिए एडिटिंग और मिक्सिंग की जाती है। गायक द्वारा हुई गलतियों को आसानी से ठीक किया जाता है। मास्टरिंग के जरिए गाने का अंतिम रूप दिया जाता है। सोशल मीडिया पर गाने की प्रमोशन की जाती है। इससे गायक की श्रोताओं द्वारा पहचाने मिलती है। यूट्युब, स्पोटीफाई के जरिए पहचान बनती है। गायक की रिकॉर्डिंग में भी मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। मीडिया ने रिकॉर्डिंग को सरल, सटीक और प्रभावशाली बनाया है।

संगीत आज के समय में कला या मनोरंजन का माध्यम ही नहीं, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण कमाई का साधन भी बन गया है। आज कलाकार घर पर भी और ऑनलाईन कलास, कोर्स और ट्यूशन देकर भी पैसा कमा रहे हैं। पहले कलाकारों को रिकार्डिंग कंपनी पर निर्भर होना पड़ता था लेकिन अब वे खुद अपना संगीत रिकार्ड और रिलीज़ करते हैं। विज्ञापनों में भी संगीत का उपयोग करके, विभिन्न कंपनियों के साथ काम भी कर रहे हैं। गानो को डाऊनलोड और सबसक्रिप्शन के माध्यम से सुनने पर भी कमाई हो रही है। मीडिया के आधार पर हर कलाकार अपने शो का प्रचार करते हैं। लाइव कॉन्सर्ट और ऑनलाईन स्ट्रीमिंग से टिकट बिकती है। जिससे कलाकारों की कमाई भी होती है। इंस्टाग्राम और फेसबुक पर कलाकार अपने संगीत का प्रचार और प्रसार करते हैं और अपनी प्रतिभ को श्रोताओं के सामने पेश कर रहे हैं। संगीत और मीडिया का इतना गहरा संबंध है जहाँ मीडिया रेडियो, टीवी. इंटरनेट, संगीत के प्रसार का माध्यम है वहाँ संगीत फिल्मों और टीवी में भावनाओं को उजागर करने वाला एक शक्तिशाली उपकरण भी है और नए कलाकारों का आने वाले समय में संगीत के साथ संबंध और मजबूत बनाए रखेंगे।

मीडिया संगीत को लंबे समय तक सुरक्षित रखने में भी मदद करता है। रेडियो स्टेशन, संगीत संस्थान पुराने संगीत को संरक्षित रखते हैं। आकाशवाणी में कई वर्षों पुराने संगीत संग्रह मौजूद है। संगीत से संबंधित किताबे, पत्रिकाएँ और शोध पत्र भी संगीत को लंबे समय तक बनाए रखने में मदद करते हैं। इसमें राग, ताल गीतों की जानकारी लिखित रूप में मिलती है। बहुत सारी संगीतिक बारीकियों को भी लंबे समय तक सुरक्षित रखने जा रहा है। www.classicalmusic.com, www.indianmusic.comआदि इंटरनेट के जरिए कोई भी संगीत, किसी भी प्रोग्राम से संबंधित गीत, लोक गीत, सूफी गीत सुना जा सकता है। मीडिया का शौध कार्य में विशेष भूमिका निभा रहा है। प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, डिजिटल मीडिया शौध कार्य को अधिक प्रभावी सुलभ और वैश्विक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मीडिया के जरिए शौधार्थियों को अलग-अलग विषयों से संबंधित नवीनतम जानकारी समाचार, रिपोर्ट आसानी से मिल जाती है। ऑनलाईन लाइब्रेरी, गूगल स्कोलर से जानकारी भी मिल जाती है। मीडिया के जरिए रिसर्च भी प्रकाशित हो रहे हैं। पॉवर प्वाईंट, वीडियो और मल्टी मीडिया का उपयोग किया जा रहा है और शोध कार्य एक संस्थान तक सीमित न हो कर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया।

निष्कर्षः-

आखिर में हम कह सकते हैं कि संगीत और मीडिया का आपस में गहरा संबंध है। संगीत का विकास प्रचार और प्रसार मीडिया पर भी निर्भर करता है। डिजिटल, मीडिया, प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया ने संगीत को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में विशेष भूमिका निभाई है। आज हर कलाकार मीडिया के जरिए संगीत में सफलता प्राप्त कर रहा है और बहुत सारे नए कलाकार भी संगीत में आकर अपनी आवाज़ को बुलन्द कर रहे हैं और यूट्युब आदि चैनल पर अपना नाम कमा रहे हैं। मीडिया संगीत को पहचान, मंच और दर्शक प्रदान करता है। दोनो का संबंध सांस्कृतिक विकास में भी सहायक हो रहा है।

संदर्भ में ग्रंथ सूचीः-

1. भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग (डॉ. अनीता गौतम)
2. भारतीय संगीत का इतिहास- श्रीधर शरतचंद्र पराजय
3. साहित्य संगीत और मीडिया (Literature Music and Media) - अश्विनी कुमार
4. भारतीय संगीत को मीडिया और संस्थानों का योगदान - राधिका शर्मा (नई दिल्ली: संजय प्रकाशन)